

संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन

दुनिया में रहते कभी हमें ऐसा लगता है कि किन्हीं बड़े लोगों का साथ मिल जाये या उनकी निकटता मिल जाये और यदि बड़े लोगों का साथ मिलता है तो हमें उनसे एक प्रकार की ऊर्जा मिलती है, शक्ति मिलती है। जिसे आध्यात्मिकता में एनर्जी ऑफ प्राक्सीमिटी कहते हैं। सानिध्य ऊर्जा कहते हैं। और ऐसी सानिध्य ऊर्जा हमें अगर मिलती है तो उसका भरपूर उपयोग हमें करना आना चाहिए।

मैं सोचता हूँ कि मेरे सामने कई भाई हैं जो हनुमान के भक्त हैं या थे, जो इस बात को अच्छी तरह जानते हैं।

“पाछे तनव तनऊ श्री नामा, जानही काज निकट बुलावा” अर्थात् ऐसा ही समय श्री हनुमान जी के जीवन में भी आया था जब उन्हें श्री राम जी का साथ मिला, उनकी निकटता और स्पर्श भी मिला, जिससे श्री हनुमान जी को भी ऐसी ही सानिध्य ऊर्जा मिली थी। जिसका भरपूर उपयोग हनुमान जी ने लंका में जाकर किया। हर बीज वृक्ष नहीं बनता लेकिन बड़े लोग, दिव्य पुरुष उस बीज को पकड़ लेते हैं जिसमें वृक्ष बनने की संभावना होती है। यहां दिव्य पुरुष राम थे और, हनुमान थे वो बीज जिसमें वृक्ष बनने की संभावना थी। हमारे साथ तो स्वयं परमात्मा है।

क्या है हमारी मनो स्थिति?

इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि मानव जीवन की तयशुदा घटना कौन-सी है। कौन-सी वह घटना है जो टल नहीं सकती है। हमारे जीवन की तयशुदा घटना है हमारी मौत, जिसने जन्म लिया है, उसकी मौत निश्चित है। मनुष्य जन्म के साथ ही मौत का टिकट लेकर आता है। फिर भी ज़िन्दगी भर हमारा अधिकांश समय, हमारी अधिकांश शक्ति, हमारी अधिकांश एनर्जी हम उन बातों में खर्च कर देते जो तय नहीं है, अस्पष्ट है और विश्वास वाली भी नहीं है। और उसी की ओर हमारी इच्छाएं भी लगी रहती हैं, जितनी-जितनी इच्छाएं और वासनाएं हमारे ऊपर हावी होती हैं उतना ही समय लगता है हमारी सूक्ष्म शक्तियों को जागृत होने में। यानि जितना-जितना हम हमारी सूक्ष्म शक्तियों को जागृत कर लेंगे उतना ही हम मौत को पहचान लेंगे। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मौत को

जानना ज़रूरी है, क्या ज़रूरी है? और फिर किसने देखा कि मौत के बाद क्या हुआ! इस संसार में लोगों का एक बहुत बड़ा समूह इसी सिद्धान्त पर जीता है यानि मौत के प्रति अज्ञानता, किन्तु इसी दुनिया में लोगों का दूसरा बहुत बड़ा समूह ऐसा भी है जो जीवन तो जीता है लेकिन बहुत डर डर कर जीता है, अपना पूरा जीवन भयभीत होकर गुज़ार देता है, यानि मौत का डर, परन्तु देखा जाए तो दोनों परिणामों के सिद्धान्त एक जैसे हैं। एक में मौत के प्रति अज्ञानता और दूसरे में है मौत का डर। किन्तु इस दुनिया में लोगों का तीसरा



ऐसा भी समूह है जो जीवन तो जीता है किन्तु जीवन और मृत्यु को यथार्थ रूप में पहचान कर जीता है, अतः वे इस बारे में सदा निश्चित हैं। हम भी मौत पर विजय प्राप्त कर सकते हैं जिसका फल है ध्यान। मेरे कहने का मतलब है कि इन तीनों साधनों से हम बेहतर ज़िन्दगी बिता सकते हैं, क्योंकि ज़िन्दगी बिताने के यूँ तो कई तरीके हैं, किन्तु बेहतर ज़िन्दगी वह मानी जाती है, जो खुशी खुशी के साथ गुजर जाये। महाभारत में अर्जुन जैसा वीर योद्धा, जिसने अनेकों युद्ध अकेले लड़े थे और अकेले जीते थे, लेकिन जब महाभारत का समय था तो उसे भी विषाद का सामना करना पड़ा। क्या? अर्जुन को अपने आप पर भरोसा नहीं था या फिर श्रीकृष्ण के प्रति कुछ संदेह था जो बार बार उनके चरणों में बैठकर हाथ जोड़कर विनती कर रहा था कि मुझे यह युद्ध नहीं लड़ना। और उस वक्त श्री कृष्ण ने उसके उस विषाद को दूर करने के लिए उसे आत्मज्ञान दिया था गीता के रूप में। गीता में

सभी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान भी लिखा हुआ है।

क्या है समस्याओं का समाधान?

राजयोग वह माध्यम है जिसके द्वारा इस ज्ञान को बड़े ही सहजता से जीवन में अपनाया जा सकता है। जिस प्रकार हारमोनियम का कोई तार ढीला होने पर उससे मधुर संगीत नहीं निकलता है, ठीक उसी तरह हमारा मानव जीवन भी मूल्यों के अभाव में व्यर्थ हो जाता है, तब इस राजयोग के माध्यम से मन को जब हम एकाग्र करते हैं तो हमें हमारे जीवन की तस्वीर स्पष्ट दिखाई देने लगती है, तब

उसकी कला वाला व्यक्ति अपने जीवन में मूल्यों को और बढ़ाने के लिए अपने संस्कारों को परिवर्तित करने में लग जाता है।

संस्कार आत्मा की एक सूक्ष्म शक्ति है, अनेक जन्मों की क्रियाकलापों का एक निश्चित लेखा जोखा है, हमारी वे पक्की और पुरानी आदतें हैं जिन्हें हम जन्म दर जन्म कर्मों की पुनरावृत्ति के रूप में प्राप्त करते हैं, संस्कार कहलाते हैं। वृत्ति की आवृत्ति का दूसरा नाम ही संस्कार है। क्योंकि संस्कार ही हमारे संकल्प, वाणी एवं कर्म

तीनों को प्रभावित करते हैं। दरअसल संकल्प, वाणी और कर्म, हमारे संस्कार ही हमारी रचना और धारणाओं का लगभग निर्धारण करते हैं। संस्कार की घनीभूत प्रतिछाया ही सूक्ष्म शरीर अथवा प्रकाश के शरीर के रूप में प्रतिभाषित होती हैं। अच्छे या बुरे संस्कार हमारी आत्मा में ही निहित होते हैं। अच्छे संस्कार सफेद वर्ण में, फरिश्तों के रूप में एवं बुरे संस्कार काले एवं डरावने प्रतिछाया के रूप में दिखाई देते हैं। इन्हीं संस्कारों से ही संकल्प, सम्बन्धों रूपी संसार का ताना बाना बुना हुआ है। साधारण अर्थों में इसे पक्की आदतों के रूप में जाना जाता है।

वास्तव में मनुष्यों के आचरण और व्यक्तित्व की जड़ें उनके विचारों में ही होती हैं। यदि विचारों की इन जड़ों को काट दिया जाये तो मनुष्य विचारहीन हो जाता है। अन्दर जो भी कुविचार, कुआचरण है उसे ही बदलना होगा। बस इस मानव वृक्ष का काया कल्प हो जायेगा।

- ब.कु. कन्हैया, चित्तौरगढ़



मोतिहारी-बिहार। द्वादशज्योतिर्लिंगम झांकी के उद्घाटन कर्ता काशी पीठ से आये शंकराचार्य नारायण तीर्थ को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.रानी साथ में है ब.कु.अशोक, ब.कु.नीशा, ब.कु.मीना तथा ब.कु.सीता।



समस्तीपुर-बिहार। जिला समाहरणालय के सभागार में डी.एम. एम रामचंद्रुडु की अध्याक्षता में सभा को संबोधित करते हुए अमेरिका से आये ब.कु.राम सिंगल भाई एवं मंचासीन है ब.कु. कृष्णा तथा अन्य अधिकारी।



भरतपुर-राज. पुलिस अधीक्षक राहुल प्रकाश, आयकर अधिकारी विशन कालिया व महापौर शिवसिंह भौट को राजयोग के बारे में समझाते हुए ब.कु. कविता।



गिदड़वाहा-पंजाब। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'सुखधाम भवन' का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए ब.कु. अमीरचंद। साथ हैं ब.कु. कैलाश तथा अन्य।



गुवाहाटी-असम। असम डारुन टाउन यूनिवर्सिटी व शिक्षा प्रभाग के मध्य एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर के पश्चात् समूह चित्र में बायें से संगीता काकोटी, डिप्टी डायरेक्टर, डिस्टेंस एज्युकेशन, ए.डी.टी.यू., डॉ. एन.एन.दत्ता, चांसलर, ए.डी.टी.यू., ब.कु. मृत्युंजय, वाइस चेयरमैन, आर.ई.आर.एफ., वाइस चांसलर, ए.डी.टी.यू., ब.कु.शोला व ब.कु. डॉ. पांड्यामणि।



चंडीगढ़-पिंजोर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् विधायक लतिका शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. रमी व ब.कु. मोहिन्दर।



हाथरस-उ.प्र.। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान' के अन्तर्गत व्यसन मुक्ति शिविर का शुभारम्भ फीता काटकर करते हुए पूर्व ऊर्जा मंत्री एवं वर्तमान विधायक रामवीर उपाध्याय एवं साथ हैं ब.कु. दुर्गेश, ब.कु. श्वेता व अन्य।



लुधियाना-पंजाब। बैसाखी के त्योहार के उपलक्ष्य में आयोजित 'रौनके बैसाखी दीया' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब.कु. राज तथा अन्य भाई बहनें।



मोहाली-पंजाब। 'रेलैक्सेशन ऑफ माइंड' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए प्रसिद्ध राजयोग टीचर एण्ड सेल्फ मैनेजमेंट ट्रेनर ब.कु.उषा एवं सभा में उपस्थित हैं आई.पी.एस एस.के.सिंह व अन्य।